शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (175-179), Jan-March 2019

समकालीन समय में नैतिक राजनैतिक एवं आर्थिक संदर्भ में गांधी जी

डॉ0 सीमा रानी

असि0 प्रोफे0, राजनीती विज्ञान विभाग

बी.डी.एम.एम.गर्ल्स पी.जी.कॉलेज, शिकोहाबाद

ईमेल - Seemadrseema101@gmail.com

सारांश

एक बार आचार्य विनोबा जी से पूछा गया कि गांधी जी को परिभाषित कीजिये। उन्होंने कहा कि विज्ञान आधायात्म गांधी । गांधी जी ने व्यक्ति और उसके जीवन के प्रत्येक पक्ष को बाह्य आन्तरिक भौतिक आध्यात्मिक प्रत्येक दृष्टि से स्पर्श किया है और शांति का संदेश दे कर प्रत्येक समस्या का व्यवहारिक समाधान दिया है । संसार के किसी भी कोने में रहने वाले जो लोग षांति व प्रेम के लिए कार्य कर रहे हैं, उन सब में गांधी जी की भावना विद्यमान हं। आप अपने जीवन से गांधी जी को नहीं निकाल सकते हैं

मुख्य शब्द– *गांधी, एकीकृत, प्रासंगिकता, नीतिशास्त्र, एथिकल रिलीजन, कौशल, नैतिक समृद्धि, अकेलापन मंत्रालय, यांत्रिकजीवन, सप्तक, सार्भौमिकमूल्य, शुचिता, न्यासिता।*

प्रस्तावना

भारत में 1915 से 30 जनवरी 1948 के दिन अपनी मृत्यु तक गांधी जी न केवल भारतीयय उपमहाद्विप में महात्मा बन गये वरन् संपूर्ण विश्व के लिए वे महान आत्मा बन गए । गांधी जी ने जीवन को एकीकृत पद्धति माना है, जिसमें सार्वजनिक जीवन में सिद्धान्त और व्यवहार में कोई अन्तर नहीं है । गांधी जी के समस्त विचार जो उस समय काल में प्रस्तुत किये गये आज भी उतना ही बल्कि अधिक महत्व रखते हैं । प्रस्तुत लेख में गाँधी जी के अध्यात्मिक या नैतिक आर्थिक एवं राजनीतिक चिन्तन पर, उसकी वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । सार्वजनिक जीवन में यदि गांधीवादी नीतिशास्त्र की बात करें तो यह स्पष्ट होता है कि गाँधी जी ने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में सिद्धान्त और व्यवहार में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं किया है । उन्होंने यह भी माना कि नीतिशास्त्र, आध्यात्मिकता, मूल्यों सदगुणों के मध्य कोई विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती है । मैं नहीं मानता कि आध्यात्मिक नियम अपने क्षेत्र में ही कार्य करता है..... सामान्य गतिविधियों..... आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में भी इस नियम की अभिव्यक्ति होती है । (सं.गां वां 28–148–9) गाँधी जी ने विलियम साल्टेर की पुस्तक 'एथिकल रिलीजन' के भाव अनुवाद में लिखा है, हमें विभिन्न विज्ञान दुनिया, को वह जैसी है वैसा ही दिखाते हैं । नीतिशास्त्र इसे कैसा होना चाहिए, यह बताता है। नीतिशास्त्र मनुष्य को यह बताता है कि उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए मानवता की भलाई के

लिए प्रयास करना ही उच्चतम नैतिकता है । (सं.गां. वां. 6: 275 : 281)

इस उच्च नैतिकता का आधार स्तम्भ उनकी अहिसां की अवधारणा है । गांधी जी ने अहिंसा को मानव जाति का वो नियम माना जिसके बिना मानव समाज का अस्तित्व नहीं रह सकता है । केवल अहिंसा ही हिंसा का प्रतिरोध कर सकती है । अहिंसा को उन्होंने निर्बलता का प्रतीक नहीं माना वरन् इसके लिए साहस की आवश्यकता को उन्होंने स्पष्ट किया, गांधी जी का मानना था कि अहिंसा और कायरता दोनों अग्नि और जल के समान साथ नहीं रह सकते।

संघर्ष को सुलझाने के लिए उन्होंने अहिंसा सत्याग्रह की पद्धति पर ही बल दिया । उसके परिणाम सर्वविदित हैं । जैसा कि मार्टिन लूथर किंग ने लिखा था, ''संभवतः इतिहास में गांधी जी प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने ईसा के प्रेम शास्त्र को मात्र व्यक्ति के संबंधों से ऊपर उठाकर से व्यापक स्तर पर शक्तिशाली और प्रभावशाली सामाजिक शक्ति बनाया।'' गाँधी जी ने कहा कि विरोधी के प्रति हिंसा करना उचित नहीं है। आवश्यकता उसके दृष्टिकोण में परिवर्तन की है । उदाहरण स्वरुप – आज जब हम संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उत्तरी कोरिया के तानाशाही शासक किंम जोंग को वार्ता करते देखते हैं तो यह तथ्य सत्य के रुप में हमारे समक्ष आता है कि हिंसा की समाप्ति हिंसा से नहीं हो सकती है । विशेष रुप से प्रमाणिक युग में हमारे समक्ष विकल्प नहीं हैं । हमें संघर्ष समाधान हेतु अहिंसा को अपनाना ही होगा । इस सार्वजनिक जीवन के साथ ही जब गाँधी जी व्यक्ति के बारे में जब चिन्तन करते हैं तो वह मात्र शरीर मस्तिष्क, कौशल उसकी क्षमताओं तक सीमित नहीं रहते हैं, वह आत्मा की बात करते हैं । आत्मा के प्रति उत्तरदायित्व की बात करते हैं। उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता की उभोक्तावादी संस्कृति को नकारा जो अंधाधुध प्रतियोगिता को ही अपना ध्येय मानती है । गांधी जी ने स्पष्ट रुप से यह माना कि भौतिक समृद्धि और नैतिक समृद्धि में सन्तुलन हो तभी आम व्यक्ति को पूर्ण संतोष प्राप्त हो सकेगा, गांधी जी के अनुसार आरामदायक विलासिता वाली आवश्यकताएं मुझे नहीं चाहिए परंतु हर नागरिक की जरुरी आवश्यकताएं पूरी होनी चाहिए । आज अमेरिका विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति है । परंतु वहां अवसाद बढ़ रहा है । ब्रिटेन जैसे समृद्ध राष्ट्र को 'अकेलापन मंत्रालय' का गठन करना पड़ रहा है । भौतिकवाद संतुष्टि का पर्याय नहीं है, यह स्पष्ट हो रहा है हमारे उपनिषदों में हजारों वर्ष पहले कहा गया था 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' अर्थात् वित्त से मनुष्य कभी संतुष्ट नहीं होता है ।

अमेरीका की फैशनेबल पत्रिका है –'लाइफ', जिसकी लाखों प्रतियाँ सारी दुनिया में जाती हैं, इस पत्रिका के अंक में थॉमसन नामक लेखक ने । ''Restless generation of U-S- youth roams Europe'' नामक लेख में उन्होंने लिखा है कि ग्रीस का एक छोट सा टापू है – नाम है 'क्रिट' उसमें एक छोटा सा गाँव है 'मटाला' वहां 50 गुफाएं हैं । अमेरिका के कुछ नवयुवक और कुछ नवयुवतियाँ इन गुफाओं में एकान्त वास कर रहे हैं । ये लोग अमरीका की समृद्धि वहां के यांत्रिक जीवन से उबरकर इन गुफाओं में भाग आए हैं । आजकल तो साधु संत भी इन गुफाओं में नहीं रहते । मठ सत्यापित होने लगे हैं । बड़ी बड़ी इमारतें बनने लगी है । लेखक द्वारा जब उन लड़के लड़कियों से पूछा गया कि आप इन गुफाओं में क्यों रहते हैं ? तो लास

एन्जिल्स के एक करोड़पति लड़के ने कहा "We come to caves to cleanse out our mind and no body bugs'' – मैं 22 वर्ष का एक युवक हूँ, परन्तु जीवन में अब ऊब गया हूँ, मुझे ईश्वर में विश्वास नहीं है न मैं यह मानता हूँ कि अमरीका दुनिया का स्वर्णिम केन्द्र है " अमरीका में घरों में 5000 वैज्ञानिक उपकरण हैं खूब धन है, टेलीवीजन है, सबकुछ है, परन्तु घर में दम घुटता है अतः स्पष्ट है कि अधिक धन संग्रह करना दुखद है । अर्थशास्त्र के हिसाब से भी इतना संग्रह अवैज्ञानिक है । गांधी जी ने आवश्यकता पर संयम की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे आत्म संतोश के साथ – साथ अन्य वंचितों की आवश्यकताएं पूर्ण हों ।

राजनीति के संदर्भ में देखा जाये तो गाँधी जी ने राजनीति का आध्यात्मिकरण किया। आजकल राजनीति में धर्म को अलग करने पर बल दिया जा रहा है । मगर गाँधी जी ने इनके समन्वय की बात की **''मैं राजनीति में लेता हूँ तो इसका कारण केवल यही है कि राजनीति हमें एक सर्पिणी की भाँति जकड़े हुए है और हम चाहे कितना भी प्रयास क्यों न करें, उससे बाहर नहीं निकल सकते । मैं इस सर्पिणी से जूझना चाहता हूँ। मैं इस राजनीति में धर्म प्रविष्ट करने का प्रयास कर रहा हूँ।''** उनके अनुसार "मानव प्रवृत्तियों का सारा सप्तक एक अविभाज्य वस्तु है । आप सामाजिक आर्थिक और विशुद्ध धार्मिक कार्य के अलग–अलग खाने नहीं बना सकती हैं । "अतः राजनीति को धर्म में पृथक नहीं किया जा सकता है ।

गाँधी जी का आदर्श सर्वोदय समाज व्यवस्था में राज्य धर्मनिरपेक्ष (सर्वधर्म समभाव) होगा । यह समाज सत्य, अहिंसा प्रेम, इत्यादि का पालन करेगा । इसी प्रकार राजनीतिज्ञों को चाहिए कि वे सब धर्मों के प्रति समान भाव रखें तथा सार्वजनिक जीवन में नीतिधर्म में सार्वभौमिक मूल्यों पर अटल रहें । उन्होंने माना कि राजनीति के क्षेत्र में व्यक्ति उन्हीं सिद्धान्तों, मूल्यों का पालन करे जो वह वैयक्तिक क्षेत्र में करता है । उन्होंने एक ऐसे राज्य की अपेक्षा की "जिसमें गरीब से गरीब भी यह महसूस करे कि यह उनका देश है और इसे बनाने में उनकी एक प्रभावी भूमिका है । "स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उन्होंने शासकों को एक अचूक मंत्र दिया कि "जब भी आप दुविधा में हों, या स्वार्थ आपके ऊपर हावी होने लगे ..... उस असहाय गरीब व्यक्ति का चेहरा याद करो जिसे तुमने देखा हो, और अपने आप से पूछो कि जो कदम तुम उठाने जा रहे हो क्या उससे उसका कोई लाभ होगा ।" (सं.गां.वा. 89–125)

वर्तमान शताब्दी क्या किसी भी शताब्दी में इससे बेहतर राजनीतिक दिशा – निर्देश कुछ और नहीं हो सकता है । गाँधी जी ने सार्वजनिक जीवन में शुचिता को अपरिहार्य माना और ऐसे लोगों को सार्वजनिक जीवन से बाहर करने की वकालत की जो भ्रष्टाचार या कदाचार में लिप्त है। स्वयं गांधी जी के शब्दों में, "जो यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई संबंध नहीं है, वे यह नहीं समझते कि धर्म का अर्थ क्या है। धर्म से पृथक राजनीति मृत्युजाल है क्योंकि यह आत्मा का हनन करती है ।

गांधी जी ने माना कि मानवीय कार्यों से पृथक धर्म का कोई अर्थ नहीं रह जाता ह।। गांधी जी ने अपने विचारों में जब साध्य और साधन दोनों ही पक्षों की पवित्रता को महत्वपूर्ण माना

तो यह बल दिया कि राजनीति का साध्य 'मानव सेवा' पवित्र है, तो साधन भी पवित्र हो । उनका विचार था मानवीय कार्यों के सभी क्षेत्रों में एक ही नैतिक संहिता का पालन किया जाना चाहिए। "व्यक्ति की दो अन्तर आत्माएं नहीं हो सकती " उनका यह कथन राजनीतीक संदर्भ में न केवल सोचने को विवष करता है, वरन् अपनी सार्वभौमिक प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है। आर्थिक क्षेत्र में गांधी जी ने स्वदेशी की संकल्पना को प्रस्तुत किया साथ ही रोजगार के महत्व को भी समझा उन्होंने स्पष्ट रुप से कहा कि "मैं भूखे नंगे व्यक्ति को वस्त्र के साथ पर रोजगार देना चाहूंगा " गांधी जी ने आर्थिक क्षेत्र में उस मशीनरी का विरोध किया जो बेरोजगारी को बढ़ावा देती है । परंतु उन्होंने ऐसी तकनीक का समर्थन भी किया "जिससे मानव जाति के एक छोटे से अंश के लिए नहीं बल्कि सबके लिए समय और श्रम की बचत हो सके परंतु काम की अपेक्षा उपलब्ध श्रमिकों की संख्या ज्यादा हो, तब मशीन बुराई पैदा करती है । "(सं.गा.वा. 59 : 356) गाँधी जी ने इस बात का समर्थन किया कि जो कार्य मनुष्य के श्रम द्वारा नही किये जा सकते हैं, केवल वही भारी मशीन को अपनाया जाना चाहिए । गाँधी जी ने शरीर श्रम के सिद्धान्त को अत्यंत महत्व दिया, उन्होंने यह माना कि "रोटी के लिए हर मनुष्य को श्रम करना चाहिए " मेहनत – मजदूरी का जीवन ही सत्य जीवन है (आत्म कथा:) कार्य के अधिकार को गांधी जी ने व्यक्ति का प्रमुख अधिकार माना और जोर देकर कहा कि, "एक सुव्यवस्थित समाज में व्यक्ति के जीविकोपार्जन को सुनिष्चित करना चाहिए ..... दुनिया में यह सबसे आसान कार्य है ..... किसी देश की व्यवस्था की परीक्षा इस बात से नहीं होती है कि उसमें कितने करोड़पति रहते हैं, बल्कि लोगों के बीच भुखमरी न होने से है ।" (सं.गां.वां. 13 : 312) इसी संदर्भ में गांधी जी ने यह संदेश भी दिया कि "यदि कोई व्यक्ति आवश्यकता भर अपके पास रखे तो किसी भी व्यक्ति को भूखा नहीं मरना पड़ेगा और सब संतोशपूर्वक रहेंगें । " (सं.गां.वा. 44 : 103–4) यदि कोई व्यक्ति वास्तविक जरुरतों से ज्यादा संग्रह करता है तो वह अपने पड़ोसी को गरीबी की धकेतला है ।

भारत और वैश्विक संदर्भ में यह बात बिल्कुल सही है . आज अनावश्यक रुप से भोजन करने वाले लोगों की संख्या इतनी ही अधिक जितना भूखे रहने वाले लोंगों की इस असंतुलन को दूर करने की बात ही गांधी जी ने कही थी । गांधी जी ने आर्थिक विचारों का ही एक महत्वपूर्ण पक्ष है उनका न्यासिता (ट्रस्टीशिप) का सिद्धांत है –"वे धनिकों से सम्पत्ति छीनने के साम्यवादी ढंग की अपेक्षा, स्वयं की सम्पत्ति में संदर्भ में उनके दृष्टिकोंण में परिवर्तन करने के पक्ष में थे । धनिकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन के लिए महात्मा गांधी के द्वारा जिस प्रन्यास सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया, उसमें धनिक अपने जीवन निर्वाह के पश्चात शेष धन को समाज के हित में लगाते हैं । यदि धनिक ऐसा न भी करे तो उनके विरुद्ध शक्ति का प्रयोग न किया जाये।" गांधीजी का ट्रस्टीशिप का सिद्धांत आर्थिक क्षेत्र में अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें पूँजी पतियों जमींदारों से यह अपेक्षा की गयी है,कि वे ट्रस्टी के रुप में कार्य करें। गांधी जी ने ट्रस्टीशिप का व्यवहारिक सूत्र मंजूर किया था (हरिजन 25–10–1952) इस सूत्र के अनुसार, "न्यासिता समाज की वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था को समतावादी व्यवस्था में रूपांन्तरित करने का एक साधन है । यह निजी स्वामित्व को किसी अधिकार को नहीं मानती सिवाए उसके जिसकी

अनुमति समाज अपने कल्याण के लिए दे ....."

ट्रस्टीशिप का सिद्धांत वर्तमान में कितना व्यवहारिक है, इसके विभिन्न उदाहरण हमारे समक्ष आते हैं जब भारत में अजीम प्रेम जी और विदेश में बॉरेट बफेट, बिलगेट्स, मार्क जुगरबर्ग जैसे धनाढ्य लोग सामाजिक हित में अपने अरबों डॉल दान कर सकते हैं तो यह कहीं न कहीं गांधी जी के ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का अनुसरण करते प्रतीत होते हैं ।

डॉ. राममनोहर लोहिया की घोषणा उचित ही है "यदि विश्व और मानवता को बने रहना है, तब हमें गांधी के साथ रहना होगा नहीं तो इसका पतन हो जाने दो ।" संसार के किसी भी कोने में रहने वाले जो लोग शांति औऱ प्रेम के लिए कार्य कर रहे हैं, चाहे वे छोटे हों या बड़े विचारक हो या कवि, राजनीतिज्ञ हों या जमींदार, व्यक्ति हों या संस्थाएं चाहे परिवार में हों या संयुक्त राष्ट्र में, उन सब में गांधी जी की भावना विद्यमान है । आप अपने जीवन से गांधीजी को निकाल नहीं सकते । सारे संसार में जो भी गांधीवादी तरीकों से किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, उन्हें सम्मान मिल रहा है और वे उस स्थान, राष्ट्र और इस समय के गांधी कहला रहे हैं । उपने जीवन में गांधी कौन नहीं बनना चाहता है, क्या यह इतना आसान है नहीं ? यही कारण है कि आइंस्टाइन ने एक बार कहा था कि आने वाली पीढ़ीयां शायद ही इस बात पर यकीन कर पायें कि कोई हांड़ माँस का इस प्रकार का व्यक्ति धरती पर था ।

संदर्भ ग्रंथ

1. गांधी एम.के. *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा,* अहमदाबाद, नवजीवन,
2. गाधी एम.के *हिंद स्वराज,* अहमदाबाद, नवजीवन ।
3. एडम्स, जेद (2010), *गांधीः नैकेड एम्बीशन,* लन्दनः क्यूरक्स एल्डन, त्रिक्स (1996) अपारथाइडस लास्ट स्टैन्डः, द राईज एण्ड फॉल ऑफ द साउथ अफ्रीकन सिक्युरिटी स्टेट, न्यूयार्कः मैकमिलन
4. अरिकन, ए.जे., के.पी. मगयार एण्ड जी.जे पिलै (1989) *द इन्डियन साउथ अफ्रीकन पिनटाउनः* आउन बरगिज पब्लिशर्स ।
5. बगवानदीन, डी. (1989) *इन्डियन्स इन साउथ अफ्रीका ए हिस्टोरिकल परसपैक्टिव इन ए.जे. अरिकन (एंड) द इण्डियन साउथ अफ्रीकन,* पिनटाउन आउन बरगिज पब्लिशर्स हैनिंग्स सी.जी. (1993) दे इन्डेटर्ड इन्डियन्स इन ऩाताल, नई दिल्ली, परमिला एन्ड कं.
6. देवानिसन चन्द्रन डी.ए. (1969) *द मेकिंग ऑफ दि महात्मा,* मद्रास ऑरियन्ट लांगमैन
7. हण्टबैक, आर.ए. (1971) *गांधी इन दक्षिण अफ्रीका* इथाका कॉर्नल यूनिवर्सिटी प्रेस ।
8. जैन. पी.सी. (1999) *इन्डियन्स इन साउथ अफ्रीका पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ रेस रेलेशन्स,* दिल्ली कालिंगा पब्लिकेशंस ।
9. प्यारेलाल (1986) *महात्मा गांधी द अर्ली फेज,* अहमदाबाद नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।